Think India (Quarterly Journal)
UGC Approved CARE List Group D Journal
ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-08
in collaboration with
Indira Gandhi Government Post Graduate College,
Bangarmau, Unnao-209868, Uttar Pradesh, India

भूमण्डलीकरण और शारीरिक शिक्षा का महिलाओं पर प्रभाव

डॉ0 राजेश कुमार पाल
(गोस्वामी तुलसीदास राजकीय
स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, कर्वी चित्रकूट)
ऋचा बाजपेई
शोधार्थी, समाजशास्त्र
(बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी)

वैश्वीकरण आज के युग की अपरिहार्यता है जिसके प्रभाव से विश्व का कोई भी देश अछूता नही रह सकता। वैश्वीकरण ने निसन्देह भरतीय महिलाओं की स्थिति को प्रभावित किया है। जीवन के हर क्षेत्र में महिलायें अपनी योग्यता क्षमता के बल पर झण्डे गाड़ रही है। देश के विकास में उनकी भागीदारी ने उन्हे अबला कमजोर से सबला और समर्थ सिद्ध कर दिया है। आज की रोल मॉडल इंदिरा नूरी ओपरा विनफ्रे, किरण देसाई, नैसी पिलोसी, सिगोलेने रॉयल, हिलेरी क्लिंटन जैसी महिलाऐं तथापि समाज की बहुसंख्यक महिलाऐं मूलभूत मानवाधिकारों से वंचित हैं, निरक्षर हैं, शोषित और पीड़ित हैं।

कहा जा रहा है कि भूण्डलीकरण की प्रक्रिया जिस तरह की समृद्धि को जन्म देगी उससे अन्य कमजोर हिस्सों के साथ–साथ औरत की दशा में भी परिवर्तन आयेगा। लेकिन भूण्डलीकरण के तहत तीसरी दुनिया के देशों में ढांचागत समायोजन से जो आर्थिक मंदी व बेकारी बढ़ी है उससे तो यही लगता है कि स्त्री भी इसी वर्ग में आती है। ढंचागत समायोजन के तहत बहुराष्ट्रीय और निजी कम्पनियो को खुली छूटसे मजदूरों की भारी छटनी हुई है। स्त्रियों के ऊपर इसकी दोहरी मार पड़ी है। एक तो घर परिवार के पुरूषों के बीच बेकारी बढ़ी है और दूसरे अर्थव्यवस्था के जिस असंगठित क्षेत्र में स्त्रियों की अधिकतम भागीदारी थी वहाँ अकुशल श्रमिक के लिए लगातार जगह कम होती जा रही है।

वैश्वीकरण ने महिलाओं के अधिकार को भी प्रभावित किया है। आज कर भारतवर्ष की नारियां विश्व स्तर पर मिस वर्ल्ड जैसी प्रतियोगिताओं में तुलनात्मक रूप से पहले से कहीं ज्यादा विजयी होकर आ रही हैं। इसका अर्थ यह कदापि नही है कि भारतवर्ष की ये महिलाऐं विश्वस्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व कर रहीं हैं बल्कि अपने उत्पाद की बिक्री बढ़ाने के लिये महिलाओं को भोग की वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया है साथ ही भारत को अपने उत्पाद की खपत करने के लिये एक कूड़ाघर बनाया जा रहा है।

वैश्वीकरण की चुनौतियाँ –

वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं ने पूरी दुनिया में असंतोष पैदा किया है। इसके प्रशंसक कम है। विकासशील देशों में भी यह परिस्थिति है। यह समझने की बात है कि इन असंतोष की जड़ में क्या है। जिससे वैश्वीकरण एक चुनौती बन गया है।
वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया ने वैश्वीकरण की उन प्रक्रियाओं को जन्म दिया है। जिसने राजनीतिक संस्थाओं राज्य प्रजातंत्र व नागरिक समाज पर पुनः सोचने को मजबूर किया है। हमारा विचार संपूर्ण वैश्वीकरण पर नही, अपितु शारीरिक शिक्षा के निजीकरण और महिलाओं के भूमण्डलीकरण पर विचार करना है।

वैश्वीकरण तथा भूमण्डलीकरण का महिलाओं पर प्रभाव

यह महसूस किया गया है कि वैश्वीकरण केढांचे के अन्तर्गत समाज के उस वर्ग को अधिक फायदा हुआ है जो अधिक योग्य, शिक्षित एवं सक्षम था। इससे समाज के वंचित, शोषित एवं हाशिये पर रहे लोगों को फायदा नही हुआ, किन्तु नुकसान अवश्य हुआ है।

वैश्वीकरण के दौर में महिलाओं की मुश्किलें बढ़ी हैं। बढ़ते मशीनीकरण में नौकरियों में असुरक्षा कम वेतन, परम्परागत हुनर की अनदेखी, विदेशी कम्पनियों की मनमानी शर्तें और उनके समक्ष कानून की असमर्थता ,,,, आदि परिस्थितियाँ औरतों को न्याय नही दिला सकीं।

बड़ी बड़ी कम्पनियों में भी महिलाओं का वस्तुकरण हो रहा है। बड़ी कम्पनियाँ अपने सामान तथा वस्तुओं के प्रचार के लिये महिलाओं की योग्यता, क्षमता तथा व्यक्तित्व का प्रयोग करती है। वैश्वीकरण के इस युग में महिलाओं के वस्तुकरण एवं व्यवसायीकरण को भारतीय समाज पर पड़े इसके नकारात्मक प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है।

वैश्वीकरण के कारण विकसित देशों में महिलाएँ निर्धनता एवं भेदभाव का शिकार हो रही हैं। एक ही तरह के काम के पुरूष तथा महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है।

Think India (Quarterly Journal)
UGC Approved CARE List Group D Journal
ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-08
in collaboration with
Indira Gandhi Government Post Graduate College,
Bangarmau, Unnao-209868, Uttar Pradesh, India

आज महिलाओं के श्रम को उत्पादन से सीधे नही जोड़ा जाता है। इसी कारण पुरूष विशिष्ट हो गये और महिलायें महत्वहीन हो गईं। महिलाऐं ज्यादातर असंगठित संस्थाओं में काम करती है और नियमहीनता के चलते वे शोषण का शिकार हो जाती हैं।

आज भी महिला श्रमिकों को मजदूरी के साथ वांछित अधिकारों से वंचित होना पड़ता है।उपभेक्तावाद, हिंसा तथा स्वच्छंद यौन व्यवहार आदि का समाज व महिलाओं पर घातक प्रभाव पडाहै।

वैश्वीकरण जहाँ विकासशील देशों के विकास को सुनिश्चित करता है, वहीं यह समाज की आर्थिक रूप से गरीब महिलाओं को अधिक उत्पीड़ित करने का प्रयास करता है।

वैश्वीकरण के महिलाओं पर कुछ सकारात्मक प्रभाव –

बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन के द्वारा राष्ट्र की सामाजिक आर्थिक प्रगति में भागीदार बनाये जाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं।

इस प्रक्रिया के अन्तर्गतमहिलाओं के अनुकूल रोजगार निर्माण किया जा रहा है ताकि योग्य तथा सक्षम महिलाएं राष्ट्र के आर्थिक विकास में सक्रिय भागीदारी निभा सकें।

आज महिलायें अधिक स्वतंत्र व आत्मनिर्भर हैं अतः इसमें सन्देह नहीं हैकि वैश्वीकरण की प्रक्रिया से महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है किन्तु कई अपेक्षित सुधार अभी बाकी हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

मानवाधिकार की अवधारणा को वैश्वीकरण से होने वाले दुष्प्रभावों से बचाने के लिये आज आवश्यकता है सशक्त ठोस कदम उठाने की,व्यावहारिक निर्णय की तथा सुचारू रूप से कार्यान्वित करने की जब हम इस दुष्चक्र से निपटने के स्थायी समाधान की चर्चा करते हैं तो सर्वप्रथम जनता को अपने अधिकारों के प्रति अधिक से अधिक जागरूक होना होगा। ऐसे में 'शिक्षा' की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिससे नागरिकों में विद्यार्थी स्तर से ही अपने आस–पास के वातावरण के प्रति जागरूक विकसित हो सकें। जागरूक नागरिक ही अपने आस पास होने वाले मानवाधिकार हनन के विरूद्ध आवाज उठाने का साहस जुटा सकेगा। सूचना के अधिकार व जनहित याचिका आर0टी0आई और पी0आई0एल0 के उचित प्रयोग व इसके सफल क्रियान्वयन से भी महिलाओं के अधिकारों को वैश्वीकरण के इस युग में जहाँ प्रतिस्पर्धा 'बाजारीकरण' भौतिक सुविधायें बढ़ती जा रही हैं वहीं आज इसकी आवश्यकता बढ़ गयी है, कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की जरूरत को समझे व सम्मान करे। वैश्वीकरण, निजीकरण, भूमण्डलीकरण, तरक्की के नाम पर होने वाले प्रकृति के दोहन से बचें।

शारीरिक शिक्षा –

प्राचीन काल से ही शारीरिक शिक्षा मानव जाति के दिनचर्या का महत्वपूर्ण भाग रही है। नृत्य, घुड़सवारी, रथदौड़, शिकार करना, तीरंदाजी, तलवारबाजी, सूर्यनमस्कार एवं प्राणायाम आदि द्वारा स्वयं को शारीरिक रूप से स्वस्थ व दक्ष रखने के साथ–साथ मानसिक रूप से भी दृढ़ रखते थे। शारीरिक रूप ये क्रियाशील रहना मनुष्य के जीवित रहने की नैसर्गिक आवश्यकता थी।

जैसे जैसे मानव ने सांस्कृतिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से विकास किया, उसी तरह शारीरिक क्रियाशीलता भी बढ़ती गयी। आधुनिक युग को तन्त्र युग कहा जाता है। आजकल प्रत्येक कार्य को मशीन द्वारा किया जाने लगा है। व्यक्ति को बहुत ही कम शारीरिक शक्ति के प्रयोग की जरूरत पड़ती है।मशीनीयुग में मांसपेशियों को निढ़ाल बना दिया है। ऐसी स्थिति में शारीरिक शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है।

शहरों में रहने वाले ग्रामीण युवकों की तरह अपने दैनिक घरेलू जीवन में अभिभावकों के कामों में हाथ बटाने की आवश्यकता नही पड़ती। शहरों में अधिक पैदल नही चलना पड़ता क्योंकि शहरों में साधनों की कमी नही है। खेल–कूद तथ अन्य शारीरिक क्रियाओं में भाग न लेकर रेडियो, टेलिविजन तथा सिनेमा आदि से अपना मनोरंजन कर लेते हैं ऐसी स्थिति में शहरी युवाओं को शारीरिक शिक्षा की अत्यन्त अवश्यकता है।

सुड़ोल एवं स्वस्थ युवक राष्ट्र की सम्पति ही नही है, बल्कि उसकी आवश्यकता भी सदैव रही है। हमारे देश के नवयुवकभविष्य के हर क्षेत्र में आगे बढ़े इसके लिये शारीरिक शिक्षा को माध्यम के रूप में अपनाना उचित होगा। इस दिशा में हमें बच्चों के पूर्ण विकास के लिये शुरू से ही योजनाबद्ध खेलों के कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है।

चार्ल्स ए. बूचर के अनुसार –''शारीरिक शिक्षा समस्त शिक्षा प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है, उद्यमशीलता का एक क्षेत्र है जो चुनी हुई शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से मनुष्य के निष्पादन का परिणाम है।''

जे0एफ0विलियम्स के अनुसार – ''शारीरिक शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति तथा व्यक्ति दलों के लिये उन परिस्थितियों में कुशल नेतृत्व, प्रचुर सुविचायें तथा समय का प्रावधान करना हैं जो भौतिक दृष्टिसे स्वस्थ, मानसिक रूपसे सजग सामाजिक दृष्टि से सशक्त हो।''

Think India (Quarterly Journal)
UGC Approved CARE List Group D Journal
ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-08
in collaboration with
Indira Gandhi Government Post Graduate College,
Bangarmau, Unnao-209868, Uttar Pradesh, India

शारीरिक शिक्षा का तात्पर्य शारीरिक व्यायाम, खेल और स्वच्छता में व्यवस्थित निर्देश प्रदान करने की प्रक्रिया को दर्शाता हैं। यह शब्द आमतौर पर स्कूल और कालेजों में शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों के लिये उपयोग किया जाता है।

इस शिक्षा का उद्देश्य एक छात्र या छात्रा को स्वस्थ शरीर, मन और आचरण का प्रशिक्षण देना है। स्वस्थ शरीर में एक स्वस्थ मन रखने के लिये एक छात्र को नियमित व्यायाम की आवश्यकता होती है।

शारीरिक शिक्षा आधुनिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। शारीरिक शिक्षा, शरीर और मन दोनों के लिये अच्छा स्त्रोत है। खेल–कूद से शरीर के सभी अंगों को निःशुल्क शक्ति प्राप्त होती है। शारीरिक शिक्षा हमें धीरज रखना सिखाती है। और हमारा मन भी शान्त करती है।

वर्तमान शिक्षा में शारीरिक शिक्षा व योग का महत्व –

"शरीर माद्यं रवतु धर्म साधनम" अर्थात शरीर के माध्यम से ही व्यक्ति अपने सभी कर्तव्यों का पालन करता है। अपने शरीर का स्वस्थ एवं निरोगी रहना बहुत आवश्यक है। मानव जीवन का प्रथम सुख निरोगी काया ही है। इसलिये स्वास्थ की रक्षा के विषय में जानकारी तथा उसके विषय में महिलाओं को भी जागरूक रहना बहुत जरूरी है। महिलाओं का सेहतमंद जीवन ही उनकी सबसेबड़ी खुशी है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन पाया जाता है। शारीरिक शिक्षा वजागरूकता सभी के लिये बहुत जरूरी है।

स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन है। शारीरिक दृष्टि से निरोगी रहना आज के युग की सबसे बढ़ी आवश्यकता है। बल्कि आरोग्य का अर्थ केवल शारीरिक दृष्टि से निरोगी रहना ही नही हैं बल्कियह व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक दृष्टि से स्वस्थ बने रहने की एक स्थिति है जिसके साथ साथ हमारी आत्मा का अच्छा रहना भी अति आवश्यक है।

शैक्षिक संस्थाओं एवं जन सामान्य के लिये स्वास्थ्य जागरूकता एवं शिक्षा का महत्व जीवन में अति आवश्यक है। बच्चों को बचपन से ही शरीर को स्वस्थ रखने एवं सेहत के बारे में जानकारी देना चाहिये जिसमें सर्वप्रथम अभिभावक एवं परिवार का महत्व है। प्राथमिकस्तर पर शैक्षिक संस्थाओं एवंविद्यालयों में भी स्वास्थ्यशिक्षा दी जानी चाहिये एवं शारीरिक क्रियाओं जैसे आसन, प्राणायाम एवं योग की शिक्षा मं विद्यार्थियों को योग्य बनाना चाहिये जिससे वे अपने जीवन को निरोगी रख सकें।

जैसे जैसे लोग विकास करते गये शारीरिक शिक्षा का उद्देश्य भी विकसित होने लगा। सभ्यता के साथ साथ शारीरिक शिक्षा के तरीकों में भी विकास हुआ। प्राचीन काल में साधारण परिवार के बच्चों के साथ ही राजा महाराजा के बच्चे भी गुरूकुल में शारीरिक शिक्षा प्राप्त करते थे।

चीन में बीमारियों के इलाज के लिये व्यायाम में भाग लिया जाता था। ईरान में युवकों को घुड़सवारी एवं तीरंदाजी की शिक्षा दी जाती थी। युनान में खेल–कूद की प्रतियोगिता को बहुत महत्व दिया जाता था। अरब में तीरंदाजी, घुड़सवारी, नेजबाजी और तलवारबाजी सिखाई जाती थी।

भारतीय व्यायाम की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इससे ध्यान एकाग्र, मन शान्त तथा स्मरण शक्ति का विकास होता हैं इसी विशेषता से आकर्षित होकर अन्य देशों में इन व्यायामों का बड़ी तीव्र गति से प्रचार और प्रसार हो रहा है।

आम जीवन में शारीरिक शिक्षा का बहुत महत्व है। आज के इस व्यस्त जीवन में महिलाओं को अपना काम ठीक ढंग से करने और अपना शरीर स्वस्थ रखने के लिये शारीरिक शिक्षा का ज्ञान होना अति आवश्यक है।

महिलाओं में अभी भी पूर्ण रूप से इसके लिये जागरूकता नही आई है। प्रमुख कारण आज का व्यस्त जीवन है। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में शारीरिक शिक्षा के प्रति महिलाओं में जागरूकता की बहुत कमी है। गांव में व्यायाम के साधनों की बहुत कमी है। न ही जिम की व्यवस्था है और न ही जुडो कराटे की।

शहरों में जिम की उचित व्यवस्था है। ऐसा हॉल जहां व्यायाम करने के लिये कई प्रकार के उपकरण होते हैं और लोग वहां व्यायाम करते हैं जिम कहलाता है।शहरों में महिलायें जिम जाकर व्यायाम करती हैं जिससे उनका शरीर स्वस्थ और मजबूत होता है और बहुत सी बीमारियों से बचाव होता है।

आजकल लोग तरह–तरह की बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। यदि हम निरन्तर व्यायामकरें तो बहुत सी बीमारियों से बचे रहेंगें। शारीरिक शिक्षा में योग का बड़ा महत्व है। पिछले कुछ वर्षों से योग को बहुत महत्व दिया जा रहा है।

योग के द्वारा हम सभी प्रकार की बीमारियों से बच सकते हैं। योग के द्वारा बीमारियों का इलाज भी किया जा रहा है। योग सभी प्रकार के उम्र के लोग कर पाते हैं। आज कल भारत में बच्चे, व्यस्क, वृद्ध एवं महिलायें सभी योग के प्रति जागरूक हो रहे हैं और बहुत सारे लोग योग करना पसन्द कर रहे हैं।

न केवल भारत में बल्कि पूरे संसार में योग को बहुत महत्व दिया जा रहा है। इसका श्रेयबाबा रामदेव को जाता है। बाबा रामदेव आज के युग के योगगुरू माने जाते हैं। उन्होने योग के प्रति सारे संसार को जागरूक किया है।

हम सब को किसी न किसी रूप में निरन्तर व्यायाम करते रहना चाहिये।

विचारित ग्रन्थ –

1. डा0 अंजलि गुप्ता – महिलाओं की स्थिति पर वैश्वीकरण का प्रभाव, कुरूक्षेत्र (मार्च 2008) पृ0 : 7–8

2. डॉ0 मंजू सिंह, डा0 आर0के0 सिंह – महिलाओं में मानवाधिकार के लिये संघर्ष, भूमण्डलीकरण के दौर में मानवाधिकार, विकास प्रकाशन, पृ0–136
3. बीरेन्द्र सिंह, मानवाधिकार का ऐतिहासिक एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य, Haman Rights in The Era of Globalization विकास प्रकशन, पृ0 231,232
4. शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा, डा0 सुबीर देवनाथ, राजस्थान राज्य पाठ्स पृस्तक मण्डल जयपुर/www.rajteachers.com
5.बी.के. नागला, वैश्वीकरण की चुनौतियाँ, भारतीय समाजशास्त्रीय चिन्तन रावत पब्लिकेशन्स, पृ0 365
6. https://www/drishtiias.com
7. इन्टरनेट